

Philip H. H. H.

I 948.1



अथ श्रीवर्णीकर्मविधिः॥
 स्नानलिङ्गव्यावृत्तिः॥
 यमिहिनित्यकर्मथंया
 कुरुय॥ अथादि॥ श्री ३
 पञ्चमिरुद्रावकस्य
 वर्णीकर्मसु चिह्नं विनि
 र्णयति॥ कर्मविनिर्णयि
 त्वर्थः॥ ॥ वाक्का॥ गुत्र
 नमस्कात्र न्यासाय च
 ययूजादि॥ रवप्रकाश
 उतादिकथनीयाय
 उं प्रथमं रुद्रव्यादि
 र्कं कर्मन कुरुता॥ ॥
 विष्णु (उच्यतां द्रु
 तादि विधिदत्ता॥

बुधकुरु (उच्यतां द्रुति
 तिलाद्रुतिपूर्वकं॥
 धनवद्वक्तुं सुसंक्ष
 नसिन्धु॥ घनतया
 व॥ उं च यत्नात् कुरुता॥
 बुधकुरु सुसंक्षुद्राद्रुति॥
 विष्णुकुरु सुसंक्षुद्राद्रुति॥
 सूर्यकुरु सुसंक्षुद्राद्रुति॥
 धनधनकन॥ वक्तु
 कुरु सुसंक्षुद्राद्रुति॥
 मनु॥ ॥ उं बुध
 क्षतिश्च विरुद्धाति
 यमस्य क्षतिश्च क्ष
 तिर्वांश्च॥ उं कुरु
 तया श्रुत्य ० ह॥ ॥

दृष्टान्ता दृष्टयति सदृक्
 । मितयसं मितयसर
 या ॥ २ ॥ मृतयसत्य
 यश्च यश्च यश्च यश्च ।
 धर्तव्यविधर्तव्यविध
 यय ॥ ३ ॥ मृतजिह्व
 सत्यजिह्वसनजिह्वस
 मिखेनच ज्ञानिमिरुथ
 दृष्टमृतयगग ॥
 ॥ ४ ॥ दृष्टकासुप्रता
 दृष्टकासुदुष्य ॥ सदृ
 कासः यतिसदृकास
 प्रगत । मितसंयसंमि
 तासा नाजयसरयसा
 मयययययययययय ॥ ५ ॥

स्वावांश्च प्रयासीवसा
 कषनश्च गुरुमधीव ।
 कीर्तिवर्णकीर्तिज्योति
 ॥ ६ ॥ इन्द्रद्वीविष्णु
 मयूना नूवत्माना रुवन्
 यथेन्द्रद्वीविष्णुम
 नूना नूवत्माना रुवन् ।
 उर्वमिर्मयउमानदेवी
 यविष्णुमानुषियानू
 वत्माना रुवन् ॥ ७ ॥ ध
 नाकवर्णः शक्रवः य
 नीवायः यथा दधि । सा
 मयययययययययय
 कावाजिनमधू ॥ ८ ॥ ध

नाना० वृत्तं कुवलय
 वीवायस्य ॥ गंधमा ॥
 सकृन्ना ० वृत्तं वेदत्र
 मयवाका ० कवमस्य
 ॥ २ ॥ दधिकाप्रा ॥ १० ॥
 नानाद्वी ॥ ११ ॥ गय
 यी ॥ स्वाहा ॥ ॥ पुडक
 तुर्संधानादाय ॥ ॥
 विकृक्कुर्संधानादाय
 ॥ ॥ सूर्यकुर्संधा
 नादाय ॥ ॥ धनखा
 नरुयकाकलगीकुव
 लारवदुरागसंगिदुका
 यममात्र ॥ ॥ दीपिसु
 वयाकुवलाखदुरा

गस्योक्तनागवाजपु
 ज॥ ॐ नागवाजाय
 दमासनन्ममः ४ पूष्य
 उर्वस्वार्नपञ्चमगता
 न॥ शुद्धादकस्वार्न॥ व
 न्दनाकतसिंहनपूष्य
 यज्ञायवीगादि॥ पिव
 न्द्याकावभूयदीय॥
 हृत्तालयनसपूवाक
 पूवल्लेनेवद्य॥ पू
 उर्गुडिरतस्यंगखन
 मूयविय॥ ॥ सूर्य
 संहिताय ॥ १० ॥ ॐ
 मभीवयुग॥ ॐ तवाया

मि॥ ॐ त्रैलोक्य ॥ ॐ
सर्वत्रैलोक्य ॥ ॥ ॐ म
ही मयूमात्र ० सुवता
नाममहास्ययत्नीमेव
संश्रुवम ॐ विद्वज्जामज
यंतीसुनूवी ० सुगमा
गमदिति ० सुषणीति ॥
॥ १ ॥ ॐ सुगमाग ० य
थिरीन्द्रामनहस ० सु
समानमदिति ० सुष
णीति ॥ दवीमामव ० सु
विजामनागसेमश्रव
नीमानूहमासुसुय
॥ २ ॥ ॐ सुनावमानू

हयतसुवकीमना
गमं ॥ लनाविद्या ०
सुसुय ॥ ३ ॥ ॐ सु
नामिवावनुवधुत
द्विर्लिवदत ॥ मध्व
वडा ० मि सुकुंद ॥ ४
ॐ सुसुययाथिवा ० १
सुव्यान्ममधियतय
खाहा ॥ वायुननपि
का ० सुव्यान्ममधि
यतयखाहा ॥ अति
रुगायथिवा ० सुव्या
० सुव्यान्ममधियत
यखाहा ॥ ॥ सुव
जायखाहा ॥ ॐ नम

का-

九

धनयउमानस्यं द्वा
 वधविहयात्र वावा
 नकास यत वनहास
 सधं वलिमास्यं हा
 ले ॥ मनु ॥ ॐ जू न
 य पाथिवो ० सूर्याना
 मधियतय स्वाहा ॥ १ ॥
 ॐ वायुवक्तविका ० स
 व्यन्तामधियतय स्वा
 हा ॥ २ ॥ ॐ जू हिरु
 तयथि व्यासूर्या ० स
 व्यन्तामधियतय स्वा
 हा ॥ ३ ॥ धनं ॥ यउ
 मानहानयाय ॥ ॥

वलिविसर्जने ॥ वा द्र
 मयूजादाकिमदाने ॥
 पूष्पद्रुति जयसुपा
 दि ॥ वतमाकवाता धू
 नके ॥ अग्निवक्त्रादि ॥
 वलिवाय ॥ सूर्यसाक्रि
 धनदरखनहयका क
 लनमालेखन अलिख
 क ॥ सगुणकाय ॥ अ
 गनतस्य ॥ गुणकच
 लिकाय ॥ धनाकाय ॥
 वाउसकलनलेखन
 लवनगुणकचर्तन
 धनधवलीकर्मविधि ॥

धनलिहायमिष्टियायमाना

गुणिला यूक्तिमसतिवा
 इकूद्रुयश्चमियायवि
 गोयारुन ॥ ॥ यद्रुद्रु
 वका गुंनुवादान लैख
 नवाय गंगमजलनेरु
 य ॥ ॥ नेद्रुद्रुवपूठि
 काश्रयकनेधूनक ॥
 पाइकूद्रुविधि (धियाइ
 क्रियायाय ॥ ॥ वाक्
 वि (शेष ॥ यजमानस्य
 ग्रीमकुंभीयश्चमिरु
 शवकस्ययविगमाह
 नसहितां ग्रीष्ममहि
 कर्मकुरुं ग्रीष्मया
 यार्थनमः ॥ ॥

कथनेयादावधुवाउय
 रुतसुघादायाधु
 नक ॥ ॥ यनवि (शेष
 दृताद्रुतिउपरुतश्रु
 वानइय ॥ ॥ ॐ अम
 यइनूबुदि ॥ ॐ अम
 वृत्तानिउमित्यादि ॥
 आद्यायन नूदिमगन
 दृताद्रुतियादाव ॥ स
 यमस्यकयमर्तधून
 क ॥ ॥ मूथयथाके
 मस ॥ दैनियिवनस
 निकस पूठिकायकार
 य ॥ लेखनहाय ॥ नि

३ लेखनहायसी अमिरुगोन

मन्त्रिनादि॥ मन्त्ररुता
लवासगुणदिनत्वाय
॥ वदक विधिना॥ च
न्दनाद्याणी वदिसुखं
आवतिष्ठति॥ ॥
लेश्वधायथस्यंदावद
ईतयकावहाताविय॥
हातानन्यासयाय॥ अ
मुमकुललेश्वनदाय॥
यन्दनादिनायुक्तयत्॥
भयपीनज्जयथय
३१०॥ व्याहृतिन१०२
जम्बुमकुलताउत्तपय
लिरवासकुलजम्बुगु

ने॥ वंध्यनूमदा॥ वकु४
काटिकावधने॥ ॥
आदिति॥ ॐ रु४ आत्म
तत्वायसाहा॥ ॐ वद
यज्ञाने॥ ॥ दूटिकास
त्वाय॥ ॥ ॐ कुव४ विर्य
तत्वायसाहा॥ ॐ द
विष्णु४ त्वाय॥ ॥ ॐ वः
निवतत्वायसाहा॥ ॐ
नम४ लम्बायव॥ त्वा
य॥ ॐ रुकुव४ स्व४ स
वितत्वायसाहा॥ ॐ य
विष्णु४॥ त्वाय॥ वी हि
दाय॥ ॐ मुना इति॥

वैवृद्धकृत्सु ॥ विकृ
कृत्सु ॥ सूर्यकृत्सु
मनिकृत्सु ॥ गवाकृ
त्सु ॥ मित्रावतृत्सु ॥
वदीसु ॥ ॥ धनककिती
काय ॥ ॥ पूनः चतुः
समनयुक्तिकासहाय ॥
ॐ गन्धद्वाराद्वाधर्मा ॥
तत्तगन्धयविशमोदने
यथमसंख्यकृत्सु ॥
ॐ २॥ यन्निः ४ वीकिः
धूजुः सुलिः ४ ॥ ॥ अ
शवागहकल्या ॥ अशा
दि ॥ असन्नितासि ॥ य

रुमानस्य अथ कदल
प्राप्तिशीयश्च गिरुहान
कयविजावाहनमिमित्य
र्थः ॐ रुः वस्त्राणि मह
यत्ना ॥ ग्रयगन्धयविश्व
समर्पयामिनमः ॥ ॥
ॐ यविश्व ॥ ॥ वीश्व
रुति ॥ ३ ॥ ॐ वस्त्रयस्त्रा
नी ॥ समिधसहताय ॥
वृद्धकृत्सु ॥ ॐ स्वः
वृद्धा ॥ यदक्रियग्नय
गन्धयविश्वसमर्प
यामिनमः ॥ ॥ ॐ य
विश्व ॥ वीश्वरुति ३ ॥

ॐ नमः ॥ १ ॥ सुवायच ॥
वाय ॥ ॥ धिक्कृत्तुस
युक् विष्णुवज्रुवनीय
नयसावत्सपिकुगन्ध
यविष्कंसमय्यामि
नमः ॥ ॥ ॐ पविष्क
वीक्षद्रुति ३ ॥ ॐ ॐ ॐ वि
कृ ॥ ॥ वाय ॥ ॥ ॥ सुय
कृत्तुस ॥ ॐ ॐ ॐ विष्क
सुययिजाहवसत्या
नयगन्धयविष्कंस
मय्यामि नमः ॥ ॐ ॐ
विष्क ॥ ॥ वीक्षद्रुति ॥
३ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ वाय ॥

मविष्कृत्तुस ॥ ॐ ॐ ॐ
वुं वनूधनागवाजोय
सोमत्सत्रिकगन्धयवि
गर्कसमय्यामि नमः ॥
ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ वीक्ष
द्रुति ३ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
रुग ॥ ॥ वाय ॥ ॥ ॥ सुय
यययसुमाययूनकाश
कात ॥ ॥ वीक्षद्रुति ३ ॥
गुप्तीनययययवाय ॥
मिणावनूगस ॥ ॐ ॐ ॐ
गुप्ती ॥ ॥ सुय ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
गुप्तीनयययययययय
मत्सत्रिकगन्धयविष्कंस

समर्थयामिनमः॥ वीक्ष
इति॥ ॐ सकषयः॥
वाय॥ ॥ वदीस॥ ॐ
विष्णुः॥ ॥ लं पृथिवीद्वय
गन्धयविष्णु कंसमर्थया
मिनमः॥ वीक्षइति॥
ॐ शानाय विविना॥ वा
य॥ ॥ अन्तयविष्णु
मृगुजनपरुतिर्म्॥ ॐ
आत्मातुयमोदव आर्म्
सर्वयवस्ति॥ तत्त्वतत्
मय आर्म् ममात्मा सुवि
र्क॥ पश्चग्निरुदात्र क
निमिषैर्विष्णुवाहनार्थ

मात्सुनसाद्यत्सुवि कग
धयविष्णु कंसमर्थयामि
नमः॥ ॥ गुरुगुवाङ्ग
उपरुत कुवाज्यादिसु
पविष्णुते॥ ॥ तत्ताश्च
नखस इदयव इदीक
तपूय्यकन्दमादिकीविष्णु
य॥ ॥ जानूयामव
नीगत्वा॥ ॥ अश्ववा
नादकल्प॥ अश्यादि॥
यजमानस्य यथा करु
लयापि धीयश्च भिरु
दानकस्य सा वत्सविक
यविष्णुवाहनसाक्षार्थ

श्री यश्च ग्रयुस पत्रिवात्रा
 यश्च दमय्य गृहगसादा
 ॥ ॐ नमस्तु यवदवग
 नमः पञ्चमिदिवत् ॥ गृ
 हाभय्य मयादर्युसी
 दयवमग्वव ॥ गीखयूजा ॥
 श्री सादति ॥ ३ ॥ घृतनयू
 र्मा ॥ ॐ मनादति ॥ ताय
 हा ले ॥ सकलेदत्ताय ॥
 धनय विजात्रादहाविधिः ॥
 धनलियाइकिलामगर्न ॥
 पूर्योदास गय्य पियला
 पायस पियलियायधद
 तवत्तकायायधदतन

धन्यादिन कथनीया
 दावसाकनयूजाद
 किमदि स्युर्मादति
 यय्यनीयाय ॥ ॥ जाय
 साजान् ॥ ॥ इति
 वगीकयूयति यत्तम
 यविजात्रादहाविधिः ॥
 अध्यायिका आयविधिः ॥
 वस्त्रकृत्या ॥ कंकिनी १
 तुं २० ग्रन्थि ४ गुं गुलिधू
 १४ अष्टागुलि ॥ ॥ त्रुड
 कृत्या ॥ तुं २० ग्रन्थि ११
 अष्टागुलि नधूज ११ कं
 किनी १ ॥ ॥ विष्णुकृत्या

की किनी १ ॥ तुं ३४ ग्रं वि
१४ छछा कुलिन धूर् १
४ ॥ ॥ सूर्य कु १५ ॥
की किनी १ ॥ तुं २१ ग्रं नि
१२ धूर् १२ ॥ ॥ म
वि कु १५ ॥ की किनी १ तुं
२१ ग्रं नि २ ग्रं तु लि ध
२ ॥ ॥ ग व या ॥ की कि
नी १ तुं १२ ग्रं नि ३ धूर्
४ ॥ ॥ मि या व १५ ॥
की किनी १ तुं ४ ग्रं नि
१ धूर् १ ॥ व दी या ॥
की किनी १ ॥ तुं २ ग्रं नि २
ग्रं धूर् २ ॥ ॥ व म या ॥

त १
की कनी ॥ व दी या १
की कनी ॥ ॥ समूद्र या
नी की कनी ॥ ॥ आत्मा
या तुं ४० ग्रं नि ३ की कि
३ धूर् चाला कृ १ ॥ यू
३ ॥ व म या ॥ ग्रं धूर् ३
ग्रं ग्री ध य उ मान य उ
मानी ॥ ॥ यू न ४ सूर्य
सा क य रु ति (ध न ग ल
की क माल ॥ ॥ व दी या १
ग्रं नि १० यू ४ धा क नी
श रु उ य रु त कु वा ॥
ग्रं क की किनी ॥ व दी या १
ग्रं नि ४ ॥ व दी या १ तुं ४

यन्निश्च कृच्छिषु ॥ ॥
मालकासुयुक्तिकादय
क ॥ ॥ धनयुक्तिका
अविधिर्यचामियाइया ॥

अथ कालिकपूर्वमिमां
वासाधनयाय ॥ ॥ स
कमनचतामाठका
य ॥ ॥ वलिवालक
दयकंदनवलिकय
अवादन ॥ कदिल्या
नायखिंदयकं ॥ यठ
य १ नागकपथं वृद्ध
धिसयूजहाय ॥ ॥

वाक्यविशेष ॥ यजमा
नस्य श्रीमच्छ्री यक्ष
गिराष्ट्रकस्य सुनाणी
अधिकम्मविहृतिमिल
र्थसूर्याय ॥ ॥ पूष
राजने ॥ ॥ विधिथं वा
इक्रियामतर्नकर्मयाद
ह ॥ पूषादसमृद्धिर्यं ड
थं ॥ शुक्रयक्रयामतर्न
अरिचावदयाहिवाप
खं धूनकोव ॥ ॥ यता
इतिविशेष ॥ ॥ अथा
यतां अवायाहविषी
यतनयकृपतिहि ॥

मृयायाडवाधुसाठ
 येसुडवृक्षनापुथिवी
 यरुगुस्मित्वाहा॥ ॥
 गुरुदामित्यामनूवृदि
 ॐ ता० सविदुर्वर्ण्य
 स्यचिणमादंदृलसू
 मनीविश्वकन्या। याम
 स्यकलेज्जुदुरुवस्यः
 पीना० सहस्रधावापय
 तामहिं० ४ स्याहा॥ ॐ
 धीवयज्जु० ॥ वदूं
 दामिंयजथयजामः
 रु० रु० शषा० ० रु० रु०
 जस्यवनी। वीवदुकावा
 वषट्का० मामज्जु० ४
 पुमावीवा० ॥ य० सह०

[illegible]

वा पृथिवी यज यं यजा
महं यावा पृथिवी रुवा
ना जे न ज्ञा य स्य वं नी ।
वो मळा वाव मळा नामा म
आयु १५ मा वी वा १५ मा य
४ महा या म यि प्रा १५ मा
ले स्या रु ॥ ॐ दं या वा मृ
थि वी त्या गा ग ॥ ॥ ॐ ज
म य रु हिका य १ नू व हि
ॐ य न व कं य जा म रु ॥ ॐ
आ व य ज मृ (श्री मृ ॥
ज म्नि य ज य य जा म रु
ज म्नि रु वा (१५ ज म्नि आ
अ स्य वं नी श्री मृ ॥ ॐ ज
१५ रु व रु हां म या द ॥ ग
व म्नि यि या धा मा न्य या
द वा ना म अ या नां यि या

ॐ तव वायुवरुणस्य ॥ ॥
 ॐ विष्णुं देवानां ॥ ॐ वयं
 ० सा मवत ॥ थयुताक
 तिनतन ॥ ॥ गुक्यक
 यामतन या इ कि या थ
 याय ॥ यूनादासदायंतय
 ॥ सुश्रवमयकृतां धू
 नक ॥ ॥ पायधिरुदि
 बलिविय ॥ वासनायूजा ॥
 दक्षिण ॥ संयुक्तद्विती ॥ ॥
 वाक ॥ यजमानस्य ग्री
 यश्चामिरादायकस्य सु
 नागीप्रदिसंयुक्तद्विती
 समुद्ररुमसु ॥ ॥
 ॐ पूरुषद्वि ॥ सर्वयू

व्वत ॥ ॥ जयस्तु ॥ ध
 क्ताउनेतन ॥ मातनाग
 कमात्राय यस्तुडादिवि
 ब्रुव ॥ वासादियश्चतवा
 यतन्तुयायचाग्रय ॥
 सर्वद्वितेनभय सर्व
 वायकवायव ॥ गदिमा
 पश्चद्विवादिनुयाय
 तनमः ॥ अज्ञानातुकि
 तकर्म अज्ञानादेकि
 हीनकी ॥ सुनाहीनादि
 कीसर्वयुक्तिक्रवम
 पुता ॥ ॥ अज्ञानादि
 थनविद्याइ ॥ कि या थ धू
 नकस्तुयसा कितां ॥ ॥

धैवृकुंथिसपूजलेहाय
नागकुण्डयकं नागपठ
पू१०॥माल॥ ॥नरालम
विबलजायानवलिथ
सदगवलि वियक॥ ॥
तायकलियादयकं
य॥ ॥ॐतिष्ठीयश्चमि
राष्ट्रकस्यवर्षवन्धन
कर्मसिमाय॥ ॥

अथसामवदस्यसूर्यसि
दिताकठिकादने॥ ॥
ॐअरायिमाह॥३॥च
र्वणीधर्मसुयवानामूक्रा
याह॥ॐन्द्रिगिवावहस्य

तिजस्यानूयातावावृक्षानं
पू१०॥सूचिरी॥अ
मर्त्यजनमानं दीवायिदा
यिर्व॥अरायिमाह॥२॥
अरायिमाह॥३॥हावा
यसूवा॥१॥अरीयम
हीवा॥माह॥३॥चर्वणी
धर्मसुयवानामूक्रायाम
ॐन्द्रिगिवावहतीकस्यामू
यात॥वावृक्षानपू१०॥
सूवाहयिही॥अमर्त्य
मानं दीवायिदायिर्व॥
अरीयमहीवायिमाह
॥२॥अरीयमहीवायि
माह॥३॥हावाहासूर्यसू
वाह॥२॥हाउ३वा॥

वर्षावृत्तमयत्रा नमू
काम । हाउ ३ वा ॥ ॐ
तुंतित्रो वृहती न्यन
यतावा वृक्ष न पूवृक्ष
सवृ किं १ । हाउ ३ वा ॥
जमर्ण अत्रमानं दिव २
हाउ ३ वा ॥ ३ तस्य सूवा
॥ ३ ॥ हाउ ३ वा ॥ सूव १
सं सूर्य ततव दि त्वावर्म
वस । सूव १ सं सूर्य ततव
पूषसिमध्यम । हाउ ३
वा ॥ सूव १ सं सूर्य ततव
ग वि श्वस्य यत्र मस्य ना
ऊसि ॥ हाउ ३ वा ॥ सूव १
सं सूर्य ततव किं १ ॥ ॐ

पूवृक्ष । हाउ ३ वा ॥
सूव १ सं सूर्य ततव सूर्य
ता । प्रसूर्यत सूवर्जम
मतवर्य ॥ ४ ॥ सूव १ सं
सूर्य सं सूर्य । सूव १ सं सा
य सं साया । डोहा वातव
दि त्वावर्म वस । त्वं पूषसि
मध्यम । सजा वि श्वस्य य
त्र मस्य नाऊसि । न किं १
॥ ॐ सूवृक्ष । सूव १ सं
साय सं सूर्य २ सूव १
सं साय सं साया । डोहा
वा प्रसूर्यत ममा ॥ ५ ॥
सुजाय प्रसूर्यत ॥ हा

नी यास्तु ३ ॥ अरिष्टिया
 लियवर्तवानाह यिता।
 नामायका अविर्ज्युष्टा
 डी ॥ ता यिज्जुसूर्यस्य वृ
 हता वृहताधी। नथं वि
 श्वं यमनूददी चाकाना
 सुपाय यस्य पाउ हांया
 डी हावा ॥ अस्य पाय यस्य
 पाय अस्य पाय यस्य पा
 या ॥ ३ ॥ सुपाय यस्य पा
 उ हांया। त्वया वयवमा
 नन सामा ॥ शत्रुर्हं वि
 श्वं यामग्भश्वाग् ॥ तन्ना
 मिजा वनू (अ) मामहन्ताम।
 अदितिः सिन्धुः पृथिवी

उर्दिशोः सुपाय यस्य पाउ
 हांया। सुपाय यस्य पाउ
 हांया। डी हावा। अस्य
 वः २ अस्य ॥ १ ॥ सुपा
 य यस्य पाउ हा ३। त्वया
 यं वयं वयवमानन माह
 शत्रुर्हं विष्टियामग्भश्वाग्
 । तन्नामिजा वनू (अ) मामे
 हन्ताम। अदितिः सिन्धु
 पृथिवी तता डी ४ सुपाय
 यस्य पाउ हा। सुपाय यस्य
 पाउ हा। डी हावा सु
 वः २ सुवः ॥ ६ ॥ स्वाहा
 त्रिका विष्टव ता। हाउ।

म।ध।धिवक्ति।नेविह
उहाउ।याहू।मसया
ववाउहाउ।वृष्णमद
नि।मरवा।उहाउ।व
स्त्रीवृष्णस्वनाडियामहा
उवा।उदिग।यदिग।
कयाता।उहावा।उवाउ
गभमसवागभमा॥२॥
स्वाश।त्रिकाविषुवना
उहाउ।म।ध।धिवक्ति
।नेप्रियाउहाउ।याहू
वृष्णयाववा।उहाउ॥
वृष्णमदी।नेरयाउ१
हाउ॥वस्त्रीवृष्णस्वना
डियानाहाउवा।उउ

दि।मविदिग।कयाता
उहावा।उविवायम
भस्ववायकममा॥१०॥
२।मिस्वयसीहितादगक
भिकाममाफा॥ ॥

कार्तिकयुक्तिमिस।ग
कमते॥कंवगकध
न्यगयावमर्तविद्यस
कलसै॥मृगुजनपमि
ववक्तिगकगुतिकाला
कलगुकालादयकीश
ययकमाल॥

धिसलायु किरीसु
कुमाउं कौय अग्नि सा
लासी ॥ ॥ मावल वा
वल हासा अउ क
० धं मयावस रठि
कु जयमा लान दुयके
ग्वेठउ० धान्य र्द० धा
याठगे ॥ ॥ अथ वा
न्यत्रालि पूजन ॥ ॥
अथादि ॥ यजमानस्य
ग्रामकु पश्चिमि रुद्रा
क पीत्यर्थे वै प्रवद स्त
यन धान्यत्रालि पूजन
निमित्तार्थे वा ॥ ॥

पूष्यराजन उ वृनम
स्त्वान ॥ ॥ वधक युका
वध ॥ ॐ स्वस्ति नः सुधा ॥
लेखमकुल स्नानं वन्द
नमिद्वय क्लाय वीत
पूष्यादि ॥ ॥ ततो न्यास
ॐ यां हृदयादि कव
यउक्त ॥ ॥ आसन ॥
ॐ अथादि ॥ ॐ अ
थवा रुताय नमः ॥ ॥
धनी ॥ ॐ धीतवर्गुं म
हाकार्य वीज पूवकथा
विधि ॥ हमालं काले सो
राग्य धन धान्यादि क

नमो ॥ ॐ वी हय श्रम ॥
ॐ पुनाय कृत्यमा ॥
वहुः स्वसि ॥ ॐ ॥ धूप
ॐ धूप सि ॥ दीप ॥ ॐ
तथा सि ॥ ॐ उ न्दमा
ॐ काय ॥ ॐ जूनय
त ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॐ मना
दूति ॥ ॥ जायस्तु ॥
ॐ नमो यकवत्राय ॥
ॐ यकवत्रयसनासीव
गकिसहस्रयूग ॥ सर्व
विश्वरूपीय नमस्तु गुरु
यकवत्र ॥ जगन्मादि ॥
भनतुस्तु कृत्यमा ॥ ल

स्वमनु लवगसि दून य
ऊम सगु व खाने धूपदी
यव तुमा रुकाय ॥ ॥
ताय हाने ॥ जायस्तु ॥
यमयातिष्ठ तुम्हलि ॥ ॥
धन लिबूद्रक कृत्यमा ॥ स्तो
त ॥ नमस्तु विवाय भक्ताय
विष्णुकृत्यमा ॥ यस्य रुद्रग
दा ॥ ॥ स्वयं कृत्यमा ॥ ॥
ऊवा कृत्यमा सीका ॥ ॥
मस्तु कृत्यमा ॥ नागदा भ
तुका नित्य ॥ ॥ दूरीत
नयस ॥ ॥ मित्रावतु
सा ॥ ॐ ॥ सफर्यय नम
मुर्य मित्रावतु नय

व १ नमः १ गृहविहृत्य (ग)
 शय धर्ममाथयव
 नमः ॥ ॥ वदीस ॥ य
 धिथी वदिकामूल्य ।
 सर्वकर्मयसिद्धय । तु
 केसूकियदयवि नम
 कः सुवसूधन ॥ ॥
 पिवनमालकासंमत
 विथ ॥ ॥ थनज्जसया
 र्चिन्दनादिसगुभणी
 दीद ॥ ॥ अठउन्नयनि
 माठशाययक ॥ कूठ
 वा गठ ५ वगुमाठवि
 यावक्षाय ॥ अठउन्न
 यनिरु ॥ ॥ वासर

७८७

शि १ वानवठ नं मा ८ ॥
 वियमाल कानववयनि
 रुसकलसंशु ॥ ॥
 धनधन्यानिवैद्यव
 नयूजाविधि ॥ ॥ थीस
 लायूदिस्याविधिधन ॥

अग्निनष्टकृपाइकक
 नवनायखदावता ॥ ॥
 विधिनयूजामूमाल ॥ ॥
 अष्टमी नवमी दशमीस
 नवनायखानकायमाल
 विद्यकर्मसंगक ॥ ॥

१ ग १००० श्री कृष्ण तारायण
सूर्य सुख देवती

गिरिवन तारायण गृहलक्ष्मी
धनश्रेष्ठ सुकलद
अस्तिमल्लकगीव श्री मायी

पञ्चमि धनवरवनि

कृष्ण क्षयामाशु

हनुमान् ॥ ॥ न

ताग वानप्रयवा

साकनाथ नृयावृक्षा

लक्ष्मणस ॥ विधि ॥ ॥

श्रीम

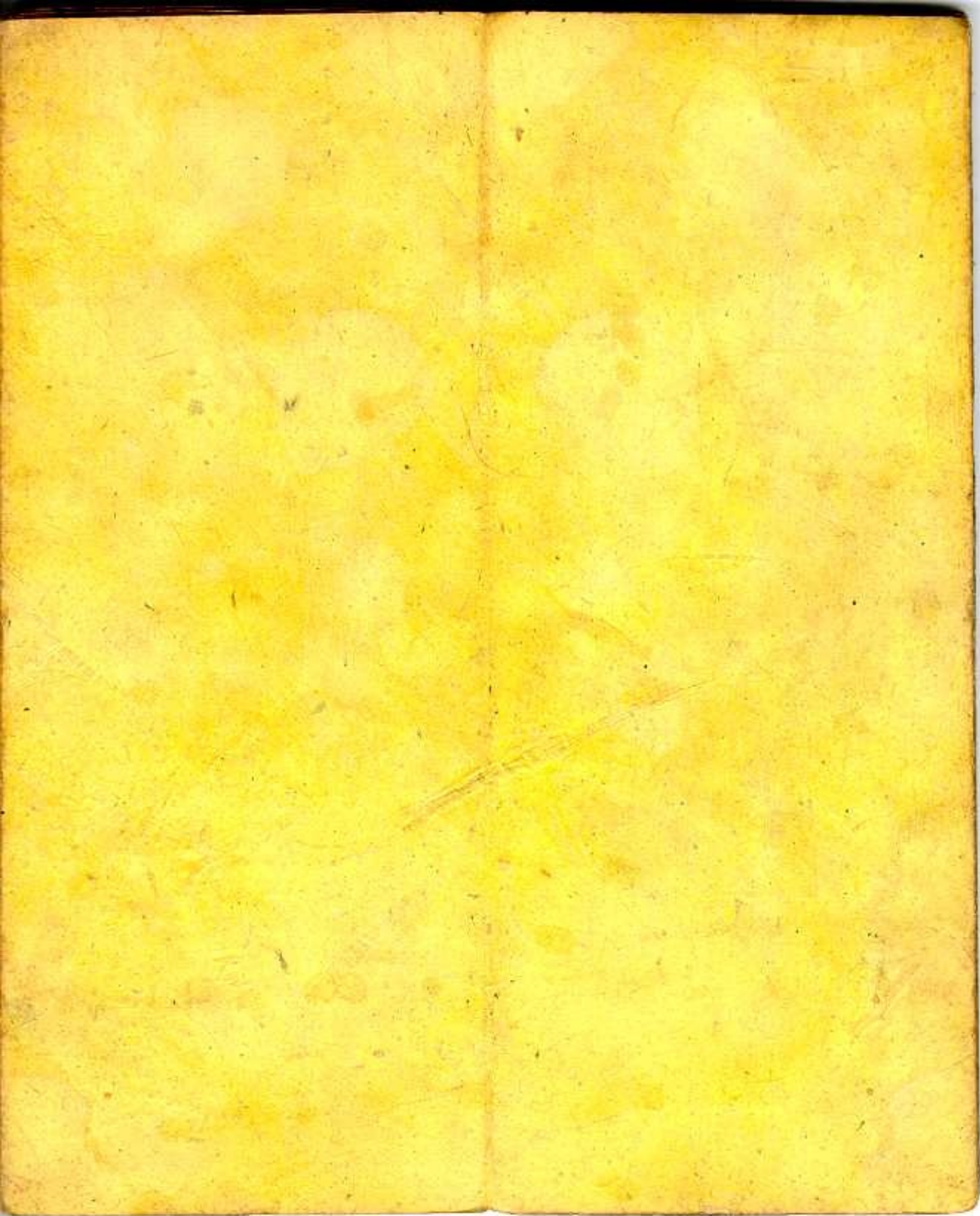
जिह्वाकि

जिवलीकि

वैकुण्ठी

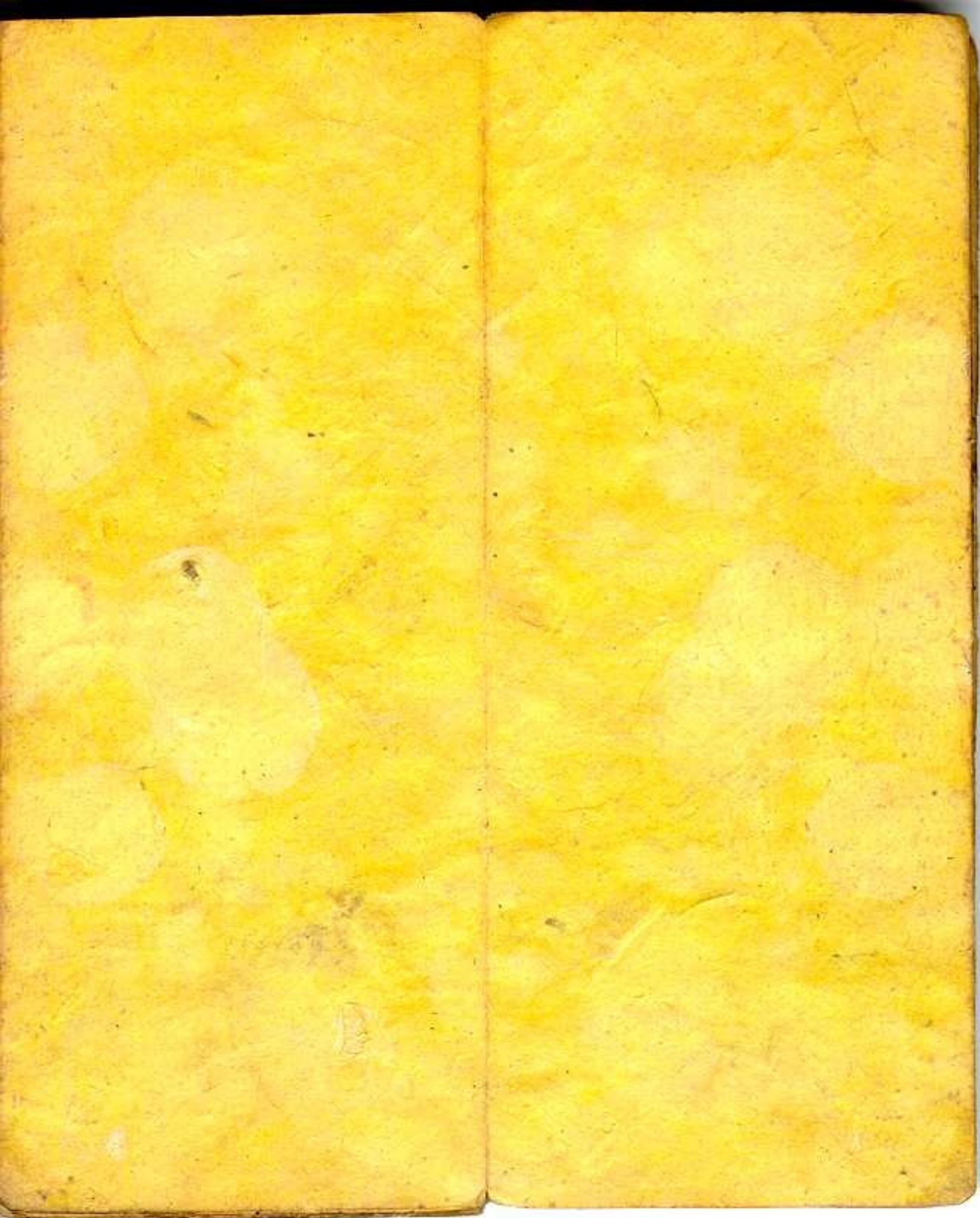
मार्जनी

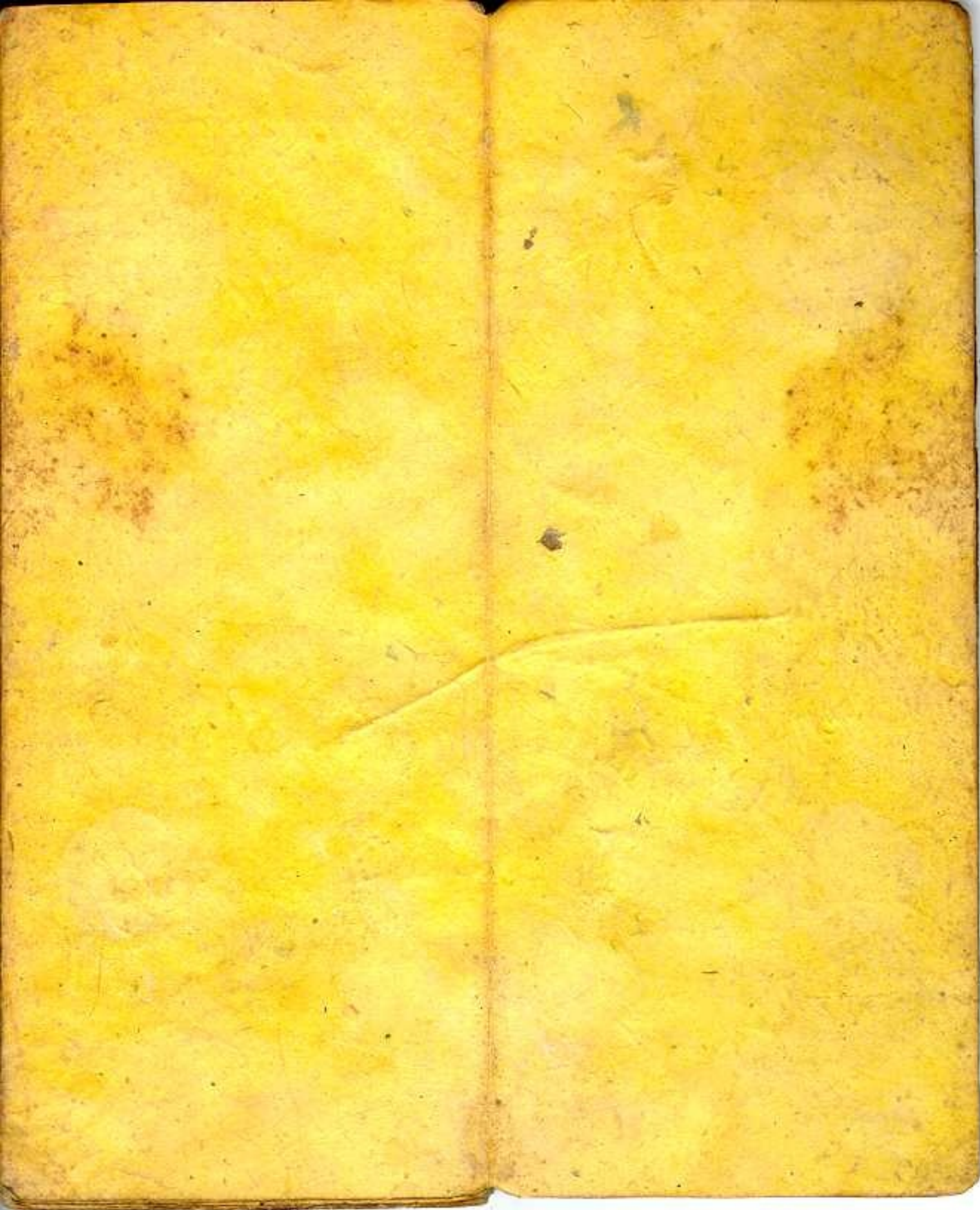












|| 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰

𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰 𐌲𐌹𐌶𐌰